रूपन्देही। कृषि विकास बैंक में 'सकारात्मक चिंतन प्रशिक्षण' कार्यक्रम के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.सुधा, ब्र.कु.राधिका तथा

पोखरा। 'पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महेन्द्र प्रसाद कोइराला, ब्र.कु.परिणीता, ब्र.कु.सीमा।

रोल्पा। नेपाली सैनिक जवानों को 'तनाव मुक्त जीवन' पर प्रशिक्षण देते हुए ब्र.कु.सुधा।

रांदेर। 'प्लेटिनम जुबली' के अवसर पर चैतन्य झांकी को शिवध्वज दिखाकर उद्घाटन करते हुए प्रींसिपल राकेश शिंदे तथा अन्य।

फर्साटिकर, नेपाल। नवनिर्मित भवन का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विकास अधिकारी नारायण ज्ञवाली, ब्र.कु.परिणीता, ब्र.कु.कमला।

छत्तरपुर, दिल्ली। विधायक बलराम तेवर व जिला कांग्रेस के अध्यक्ष संजीव यादव को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु.अनीता।

आत्मविश्वास - सफलता की कुंजी

'असंभव' शब्द मेरी जीवन रूपी डिक्शनरी में नहीं है - यह वाक्य इतिहास के प्रसिद्ध महान वीर नेपोलियन के ही नहीं हैं परंतु इस मानव सृष्टि के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा के भी हैं। यह वाक्य इनके अंदर की शक्ति आत्मविश्वास को बोधित करता है।

आत्मविश्वास ही सफलता की सर्वश्रेष्ठ कुंजी है। जहां आत्मविश्वास है वहां विजय स्वत: ही परछाई की तरह साथ रहती है। किसी विजेता की ओर यदि हम ध्यान देंगे तो पायेंगे कि उनकी जीत का रहस्य उनका आत्मविश्वास है। मानव की संपूर्ण सफलताओं का भवन आत्मविश्वास की नींव पर ही टिका हुआ है। जिस प्रकार धरती के ऊपर को फैंका हुआ पत्थर अंतरिक्ष में नहीं पहुंच सकता, पत्थर ऊपर जाता हुआ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम को तोड़ता है। उसी प्रकार आत्मविश्वास से रहित मनुष्य जीवन के नियम को तोड़ता है। जहां आत्मविश्वास है वहां जीवन अविराम गति से विजय की ओर अग्रसर होता रहता है। जिन व्यक्तियों को अपनी शक्तियों पर विश्वास नहीं होता वे न तो शक्ति प्राप्त कर सकते हैं और न ही किसी विषय में कृतकार्य हो सकते हैं। संशयात्मा सदा विफल और अंत में बुरी तरह नष्ट होती है। इसलिए कहा गया है - 'संशय बुद्धि विनश्यंति।' जब मन में ही सफलता को न जमा सकें तो संसार में कोई भी शक्ति सफलता पाने में सहायता नहीं कर सकती। ऐसे देखा जाए तो बहुत ही गिनती के व्यक्ति हैं जो वास्तव में अपने गौरव एवं अपनी योग्यताओं पर विश्वास रखते हैं। नेपोलियन जैसे महान वीर योद्धा, महात्मा गांधी जैसे महान नेता आदि अपनी योग्यता पर विश्वास न रखते तो वे इस संसार में कुछ भी नहीं कर पाते। ऐसे आत्मविश्वासी व्यक्ति आज संसार में अमर हो गए।

हमारी सफलता हमारे आत्मविश्वास का अनुसरण करती है। संकुचित विचार हमें अपनी सीमा के बंधन में बांध देते, उन्हें लांघकर जब तक हम अपने आत्मविश्वास की ओर अपने कदम नहीं बढ़ते तब तक हम अपनी आशाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। यदि हमारा आत्मविश्वास कम है तो ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव भी कम होता जायेगा। अपने में आत्मविश्वास को विकसित करते हैं। जब तक दृढ़ता नहीं तब तक चाहे कितने ही महान संकल्पों की रचना हम क्यों न कर लें हम उन्हें साकार रूप नहीं दे सकते। आत्मविश्वास एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य की काया कल्प कर सकती है। यदि मनुष्य का आत्मविश्वास जग जाए तो वह हर प्रकार की दशा में रहने के बावजूद भी जो चाहे वह कर सकता है। जहां आत्मविश्वास है वहां साधन आदि सब स्वत: ही सहयोगी बन जाते हैं। इसलिए कहा है कि - ''विश्वास हमेशा फलदायक होता है।''

आत्मविश्वास ही उन्नति का साधन है - हम ज्ञानी तू आत्माओं, योगी तू आत्माओं का एक ही लक्ष्य है - संपूर्णता की प्राप्ति। ईश्वरीय संतान होने के कारण यह परमावश्यक है कि हमारा हर कदम चढ़ती कला की ओर बढ़े। क्योंकि 'चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला'। हर सेकण्ड हमारी उन्नति हो, हर कदम में पद्मों की कमाई जमा हो इसके लिए चाहिए संपूर्ण आत्मविश्वास। इससे ही हम अपने लक्ष्य को पूर्ण कर सकते हैं। यदि जरा भी संशयात्मक संकल्प उठा कि 'हम सफल होंगे या नहीं' तो यही हमारे जीवन में उन्नति के मार्ग में बाधक बन जाता है। हमको आगे बढ़ने से रोक देता है और संकट एवं परिस्थितियों से हमारे चारों ओर अपना घेराव डाल देता है। इसलिए अपने

संकुचित विचार हमें अपनी सीमा के बंधन में बांध देते, उन्हें लांघकर जब तक हम अपने आत्मविश्वास की ओर अपने कदम नहीं बढ़ते तब तक हम अपनी आशाओं को पूर्ण नहीं कर सकते।

मन से जब हम इन संशय रूपी भूतों को आत्मविश्वास रूपी बल से बाहर फेकेंगे तभी हमारी उन्नति का रास्ता साफ और स्पष्ट होगा तथा निर्विघ्न हम अपने मार्ग में बढ़ते रहेंगे। याद रहे जहां आत्मविश्वास है वहां तमाम शक्तियां संगठित होकर कार्य में लग जाती है। आन्तरिक बल दुगुना हो जाता है। इससे असीम उत्साह प्राप्त होता है, मानसिक योग्यताओं का अद्भुत विकास होता है, कार्य-शक्ति कई गुना बढ़जाती है। इससे सहनशक्ति और सामर्थ्य का विकास होता है और हम निश्चिंतता से अपने कदम अपनी मंजिल की ओर निरंतर बढ़ाते रहते हैं। जो स्वयं ही प्रज्ज्वलित नहीं, वह दूसरों को प्रकाशित कैसे कर सकता है? आत्मविश्वासी के सामने दुनिया की कोई बाधा टिक नहीं सकती है और न ही वह कभी किसी से हार ही मानता है। जिसमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हो वही उच्चत्तम स्थिति को प्राप्त कर सकता है।

आत्मविश्वासी - एक कुशल प्रशासक - जेम्स एलेन ने कहा है ''जिनके व्यक्तित्व से विश्वास और मस्तिष्क से श्रेष्ठता के भाव टपक रहे होंगे, सफलता उन्हें ही मिलेगी।''

किसी और ने कहा है - ''जिसका आत्मविश्वास नहीं हार सका, वह स्वयं भी कभी नहीं हार सकता है।''

ठीक ही तो है - जिस समय सारी आशायें समाप्त हो जाती हैं उस समय अटूट आत्मविश्वास और लगातार काम करते रहने का संकल्प ही मनुष्य को सफल और विजयी बनाता है। इसलिए जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास है वही एक कुशल प्रशासक के रूप में प्रसिद्ध हो सकता है। प्रशासन की कला अपने आपमें एक बहुत बड़ी कला है क्योंकि इसमें अधिकतर सभी शक्तियों का, गुणों का और विशेषताओं का प्रयोग होता है। एक कुशल प्रशासक की कसौटी है विपरीत वातावरण, वायुमंडल, व्यक्ति एवं स्वभाव संस्कार यदि इनमें भी वह इन्हें परखकर, यथार्थ निर्णय लेकर, स्वयं संतुष्ट रहता है तथा हरेक को संतुष्ट रखता है तभी कहेंगे कि वह कसौटी पर खरा उतरा।

विश्व भर में सर्वश्रेष्ठ प्रशासक थे - प्रजापिता ब्रह्मा। आज तक संपूर्ण इतिहास में ऐसे किसी भी प्रशासक का वर्णन नहीं जिन्होंने इतनी कुशलता से प्रशासन किया हो। ब्रह्मा बाबा में यह विशेष गुण था कि वे किसी भी कार्य को असंभव नहीं मानते थे। यहां तक कि सभी मित्र-सम्बन्धी आदि उनके विरूद्ध हो गए, समाचार-पत्रों में उनकी बुरी तरह से बदनामी हुई फिर भी परमात्मा शिव बाबा में अटूट विश्वास व स्वयं में संपूर्ण आत्मविश्वास के कारण वे कभी भी हिम्मत नहीं हारे, निराश नहीं हुए अथवा असफलता आने पर भी वे कभी भी उदास नहीं हुए। चिंताओं की रेखा कभी भी उनके विशाल मस्तक ललाट पर उभरी हुई नहीं देखी गई। उनका यही विश्वास था कि हिम्मत करने वाले को ही खुदा की हजार गुना मदद मिलती है। उन्हीं के इस आत्मविश्वास की शक्ति के कारण, उनकी त्याग, तपस्या और अथक सेवाओं के कारण आज भी यह रूद्र ज्ञान यज्ञ पिछले 76 साल से निर्विघ्न रूप से दिन दुना रात चौगुना उन्नति की ओर बढ़ता जा रहा है।

इसलिए किसी ने ठीक ही तो कहा है - ''जिसे आपनी योग्यता, क्षमता और शक्ति सामर्थ्य पर विश्वास है वही एक कुशल प्रशासक बन सकता है। जिन्हें स्वयं की क्षमता पर ही विश्वास नहीं, दूसरे लोग भी उन पर विश्वास नहीं करते।'' ऐसे दृढ़विश्वास वाले प्रशासक जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। भले ही उनके मार्ग में कितने ही अवरोध चट्टान बनकर अड़े क्यों न रहे हों। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व संपर्क में आने वालों में भी प्राण फूंक देता है और वे अनायास ही उनके सहायक बनते जाते हैं।

आत्मविश्वास होने से फायदे

(शेष पृष्ठ 8 पर)